सुमित्रानन्दन पन्त (20 मई, 1900- 28 दिसम्बर, 1977)

सुमित्रानन्दन पन्त जी का जन्म कूर्मांचल प्रदेश के कौसानी ग्राम में हुआ था। आधुनिक हिंदी साहित्य में छायावाद के प्रमुख प्रवर्तक, प्रकृति के सुकुमार कवि, भाषा के सूत्रधार एवं सबसे बड़े विधायक समझे जाने वाले पन्त जी का खड़ी बोली कविता के विकास में महत्वपूर्ण प्रदेय है। उन्होंने हिंदी कविता को नए युग का स्वर बनाकर समाज की अग्रगामी शक्तियों के आर्दशों को अभिव्यक्ति दी। उन्होंने हिंदी को कोमलकान्त पदावली प्रदान कर उसमें मिठास भरी और काव्य कला के बाहम रूप को संवार कर और रचना शैली को समृद्ध कर हिंदी की आंतरिक अर्थ-व्यंजक शक्ति को बढ़ाया। यद्यपि पन्त जी की गद्य कृतियां महत्वपूर्ण मानी गई हैं लेकिन उनमें भी उनका कवि व्यक्तित्व ही प्रभावी है। वस्तुत: काव्य ही उनके अन्तर्मन की सबसे सशक्त और प्रखर अभिव्यक्ति है। पन्त जी के प्रारंभिक समय में "वीणा" से "युगान्त" तक की रचनाएं रखी जाती हैं। इन रचनाओं का शिल्प विचित्र्य सशक्त, कल्पना, प्रकृति प्रेम, ध्वनि बोध, गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा अंग्रेजी के कीट्स, शैली तथा वड्सवर्थ से प्रभावित है। इस काल में पन्त जी की काव्य रचना प्रकृति से मानव और कल्पना लोक से चिंतन के आलोक की तरफ बढ़ती है। पन्त जी के द्वितीय चरण की रचना है "युगान्त"। इसमें एक ओर वे गांधीजी से प्रभावित हैं और दूसरी ओर नयी चेतना मार्क्सवाद के प्रति भी उनका भावुक रूझान जोर पकड़ता है। गांधीवादी और माक्सर्ववादी विचारों को लेकर उनके मन में द्वन्द और असमंजस रहा। बाद में इन दोनों से अलग होकर उन्होंने एक नये दर्शन "अरविन्द दर्शन" को अपना लिया। अपने काव्य विकास के अंतिम चरण में वे कल्पना और सौन्दर्य से हटकर जीवन की ओर मुड़े । उन्होंने अपनी रचनाओं में गांव की उपेक्षित जनता के चित्र खींचे तथा नवजागरण का संदेश दिया। "युगवाणी" और "ग्राम्या" इस युग की प्रतिनिधि रचनाएं हैं। पन्त जी की कविता के समूचे विकासक्रम को देखें तो मूल्त: वे सौन्दर्य के कवि हैं।

इनकी प्रमुख रचनाएं हैं - वीणा, उच्छ्वास, ग्रन्थि, पल्लव, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, रजत शिखर, शिल्पी, ज्योत्स्ना, पांच कहानियां, गद्य-पथ, साठ वर्ष: एक रेखांकन, आधुनिक कवि, पल्लविनी, रश्मिबन्ध, चिदम्बरा आदि।